ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

14 October 2024

वर्ल्ड वाइड फंड (WWF) की लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट 2024

संदर्भ: हाल ही में वर्ल्ड वाइड फंड (WWF) फॉर नेचर ने अपनी लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट (LPR) 2024 जारी की है। इस रिपोर्ट के अनुसार, 1970 से 2020 के बीच वैश्विक वन्यजीव आबादी के औसत आकार में 73% की भारी गिरावट आई है।

- इस रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि यह गिरावट जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के नुकसान के आपस में जुड़े संकटों का संकेत देती है। इसके परिणामस्वरूप ठोस प्रयासों की तत्काल आवश्यकता है ताकि इन गंभीर चुनौतियों का समाधान किया जा सके।

रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष

कुल गिरावट:

- रिपोर्ट में 2022 के संस्करण में दर्ज 69% की गिरावट की तुलना में हालिया आंकड़ों में वृद्धि (73%) को स्पष्ट रूप से उजागर किया गया है। यह डेटा लिविंग प्लैनेट इंडेक्स (LPI) पर आधारित है, जिसमें 5,495 प्रजातियों की लगभग 35,000 आबादी का डाटा शामिल हैं।

पारिस्थितिकी तंत्र-विशिष्ट गिरावट:

- मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र में 85% तक गिरावट आई है।
- स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र में 69% तक गिरावट आई है।
- समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र में 56% तक गिरावट आई है।

वन्य जीवन के लिए खतरे:

- आवास की क्षति और क्षरण मुख्य खतरे हैं, जो असंवहनीय कृषि पद्धतियों और खाद्य उपभोग पैटर्न के कारण उत्पन्न हो रहे हैं।
- अन्य खतरों में अति-शोषण, आक्रामक प्रजातियाँ और बीमारियाँ शामिल हैं।
- एशिया-प्रशांत क्षेत्र में प्रदूषण गंभीर खतरा है, जहां वन्यजीवों की आबादी में औसतन 60% की कमी आई है।

भारत-आधारित विशिष्ट अवलोकन:

- रिपोर्ट में भारत में गिद्धों की तीन प्रजातियों में चिंताजनक गिरावट का उल्लेख किया गया है:
  - » सफेद पूंछ वाला गिद्ध (Gyps bengalensis): 2002 से 67% की गिरावट आई है।
  - » भारतीय गिद्ध (Gyps indicus): 48% की गिरावट आई है।
  - » पतली चोंच वाला गिद्ध (Gyps tenuirostris): 89% तक गिरावट आई है।
- इन गिरावटों के बावजूद, भारत में कुछ प्रजातियों, विशेषकर बाघों, ने सक्रिय संरक्षण प्रयासों के फलस्वरूप उल्लेखनीय सुधार प्रदर्शित किया है। अखिल भारतीय बाघ अनुमान 2022 के अनुसार, देश में बाघों की संख्या न्यूनतम 3,682 दर्ज की गई, जो कि 2018 में केवल 2,967 थी।

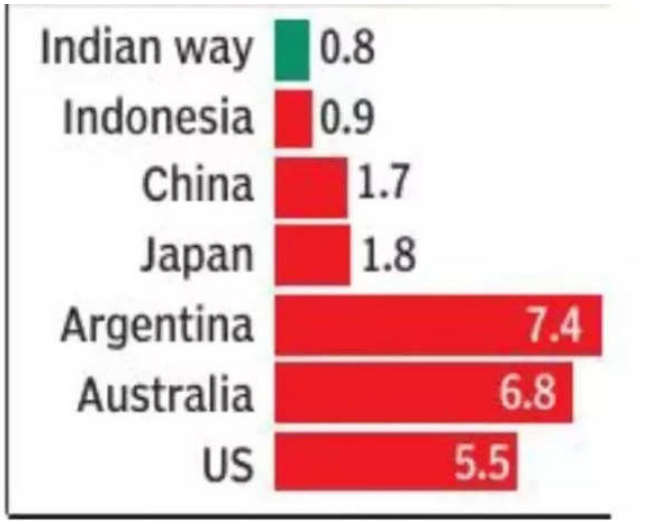

वन्यजीवों की संख्या में कमी के निहितार्थ:

- वन्यजीवों की घटती आबादी पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य और संभावित विलुप्ति के जोखिम का महत्वपूर्ण संकेतक है। जब पारिस्थितिकी तंत्र क्षतिग्रस्त होते हैं, तो वन्यजीवों की संवेदनशीलता बढ़ जाती है।
- रिपोर्ट में इस बात पर जोर दिया गया है कि प्रकृति की क्षति और जलवायु संकट समाज में अस्थिरता लाते हैं, जिससे मानव आजीविका को खतरा होता है।

वैश्विक प्रतिबद्धताएं और भावी कार्यवाहियां:

- वैश्विक जैव विविधता ढांचे के माध्यम से प्रकृति की हानि को रोकने, पेरिस समझौते के तहत तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने और संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में काम करने के लिए महत्वाकांक्षी वैश्विक लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं।
- 2030 तक निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए वर्तमान उपाय अपर्याप्त हैं।

साहित्य नोबेल पुरस्कार 2024

संदर्भ: हाल ही में साहित्य का नोबेल पुरस्कार 2024 दक्षिण कोरियाई लेखिका हान कांग को उनके गहन काव्यात्मक गद्य के लिए प्रदान किया गया है, जो ऐतिहासिक घटनाओं की पीड़ा को गहराई की व्याख्या एवं मानव जीवन की कोमलता और संवेदनशीलता को प्रकट करता है। हान कांग साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली दक्षिण कोरियाई लेखिका हैं।

हान कांग का साहित्यिक कैरियर:

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

- हान कांग ने 1993 में कविता के माध्यम से अपने लेखन की यात्रा की शुरुआत की, इसकी सफलता ने दक्षिण कोरियाई साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया।
- 1995 में, उन्होंने अपने लघु कथाओं के पहले संग्रह लव ऑफ योसु का प्रकाशन किया, जिसने उन्हें साहित्यिक समाज में व्यापक प्रशंसा और पहचान दिलाई।
- उपन्यास द वेजिटेरियन (2007) ने हान कांग को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई। इस कृति के माध्यम से उनका लेखन व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचा और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया।

प्रमुख कृतियाँ:

- **द वेजिटेरियन (2007):** यह उपन्यास एक महिला के मांस का सेवन बंद करने के निर्णय के गहन परिणामों को दर्शाता है तथा उसके परिवार की प्रतिक्रियाओं के माध्यम से सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं को चुनौती देता है।
- **ह्यूमन एक्ट्स (2014):** 1980 के ग्वांगजू विद्रोह की पृष्ठभूमि पर आधारित, यह उपन्यास विभिन्न दृष्टिकोणों से घटना की जांच करता है और हिंसा, आघात और लचीलेपन के विषयों पर विचार करता है।
- **द व्हाइट बुक (2016):** जीवन और मृत्यु की धारणाओं पर गहन चिंतन करते हुए, यह कृति दार्शनिक विश्लेषण को प्रस्तुत करती है।

साहित्यिक शैली और विषयवस्तु:

- हान कांग की लेखनी सरल है जिससे जटिल भावनाएँ भी आसानी से व्यक्त होती हैं।
- उनकी कृतियों में ऐतिहासिक घटनाओं से उत्पन्न पीड़ा के विषय शामिल हैं, जिन्हें संवेदनशीलता के साथ पेश किया गया है।
- हान कांग की रचनाएँ महिलाओं के अनुभवों पर ध्यान केंद्रित करती हैं और लैंगिक मुद्दों पर महत्वपूर्ण जानकारी देती हैं।
- हान कांग का लेखन मानव जीवन की गहनता की सूक्ष्मता से पड़ताल करता है, जिससे जीवन के अर्थ और उद्देश्य के संबंध में प्रश्न उत्पन्न होते हैं।

अन्य पुरस्कार:

- **मैन बुकर अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार (2016):** यह पुरस्कार 'द वेजिटेरियन' के लिए प्रदान किया गया है।
- **प्रिक्स फेमिना एट्रेंजर (2017):** यह पुरस्कार 'ह्यूमन एक्ट्स' के लिए प्रदान किया गया, जिसने उन्हें एक सशक्त कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित किया।

साहित्य में हाल के नोबेल पुरस्कार विजेता:

- **2023:** जॉन फॉसे को उनके नाटकों और गद्य के लिए सम्मानित किया गया।
- **2022:** एनी एरनॉक्स को उनके साहित्य में सामाजिक परिवर्तनों के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण के लिए सम्मानित किया गया।
- **2021:** अब्दुलरजाक गुरनाह को यह पुरस्कार उपनिवेशवाद और शरणार्थी अनुभव के उनके करुणामय प्रस्तुति के लिए दिया गया।
- **2020:** लुईस ग्लुक को उनकी काव्यात्मक कृति के लिए सम्मानित किया गया।

साहित्य में नोबेल पुरस्कार के बारे में:

- यह पुरस्कार प्रत्येक वर्ष उन लेखकों को दिया जाता है, जिनकी रचनाएं आदर्शवाद का प्रतीक होती हैं और मानवीय स्थिति का अन्वेषण करती हैं।
- प्रथम पुरस्कार 1901 में सुली प्रुधोमे को उनके काव्य योगदान के लिए दिया गया।

कच्छ में कैराकल प्रजनन एवं संरक्षण केंद्र

संदर्भ: हाल ही में गुजरात सरकार ने कच्छ में कैराकल प्रजनन एवं संरक्षण केंद्र की स्थापना की घोषणा की है, जो वन्यजीव संरक्षण की दिशा में एक अहम कदम है। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने मांडवी में श्यामजी कृष्ण वर्मा स्मारक पर वन्यजीव सप्ताह के दौरान इस पहल का अनावरण किया।

- इस योजना का उद्देश्य लुप्तप्राय प्रजातियों, विशेषकर कैराकल और उनके आवासों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है, जिससे जैव विविधता के संरक्षण को बढ़ावा मिल सके।
- कच्छ के चाडवा राखल क्षेत्र में स्थित यह केंद्र अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है। सरकार ने इस परियोजना के लिए 10 करोड़ का बजट आवंटित किया है, जिसका उद्देश्य गंभीर रूप से लुप्तप्राय कैराकल (हेनोटारो) प्रजातियों का संरक्षण और प्रजनन सुनिश्चित करना है।

- भारत में, कैराकल को भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम की अनुसूची । के तहत शामिल किया गया है, जो इसकी संवेदनशील स्थिति को दर्शाता है। जबकि अफ्रीका में उनकी अधिक संख्या होने के कारण इन्हें IUCN द्वारा 'सबसे कम चिंता' वाली श्रेणी में रखा गया है। वर्तमान में गुजरात में कैराकल को केवल 19 बार देखा गया है, जिनमें से केवल नौ बार की पुष्टि तस्वीरों के माध्यम से की गई है और ये सभी तस्वीर कच्छ जिले की हैं।

- कैराकल निशाचर और फुर्तीले शिकारी होते हैं, जिन्हें उनके विशिष्ट कान के गुच्छों और शिकार कौशल के लिए जाना जाता है। ये प्रजाति मुख्य रूप से शुष्क और बंजर क्षेत्रों में पाई जाती है लेकिन आवासीय क्षति ने भारत में इनके अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है, जिससे संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है।
- चाडवा राखल क्षेत्र, जहां कैराकल केंद्र स्थापित किया जा रहा है, जैव विविधता का धनी क्षेत्र है। यहां तेंदुए, मगरमच्छ, भारतीय हिरन, रेगिस्तानी लोमड़ी, सियार सहित स्तनधारियों की 28 प्रजातियां, सरीसृपों की 28 प्रजातियां और पौधों की 243 प्रजातियां पाई जाती हैं।

ताइवान के खिलाफ चीन की 'एनाकोंडा रणनीति'

संदर्भ: ताइवान के नौसेना कमांडर एडमिरल तांग हुआ ने खुलासा किया है कि चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए), ताइवान के आसपास अपनी सैन्य उपस्थिति बढ़ा रही है, जिसके लिए 'एनाकोंडा रणनीति' का उपयोग कर रही है।

- इस बहुआयामी रणनीति में सैन्य, मनोवैज्ञानिक और साइबर रणनीति शामिल है, जो ताइवान पर दबाव बनाने के लिए बनाई गई है। यह रणनीति अमेरिकी गृहयुद्ध की 'एनाकोंडा योजना' से प्रेरित है, जिसका मुख्य लक्ष्य विरोधी की आर्थिक, सैन्य, और राजनीतिक गतिविधियों को अवरुद्ध कर उसे रणनीतिक रूप से कमजोर करना था।
- चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (PLA) ताइवान को घेरने की तैयारियों में है, जिससे एक बड़ा सैन्य खतरा उभर रहा है। हाल के आँकड़े चीनी सैन्य गतिविधियों में नाटकीय वृद्धि दिखाते हैं, ताइवान के पास परिचालन करने वाले जहाजों की संख्या जनवरी में 142 से बढ़कर अगस्त तक 282 हो गई, उसी समय सीमा में हवाई घुसपैठ 36 से बढ़कर 193 हो गई।
- यह रणनीति न केवल ताइवान की सुरक्षा को कमजोर करने का प्रयास करती है, बल्कि भय और अस्थिरता पैदा करने के लिए मनोवैज्ञानिक दबाव का भी उपयोग करती है। इसका उद्देश्य ताइवान को रणनीतिक गलतियों की ओर धकेलना है। राजनीति विज्ञानी जून टेफेल ड्रेयर के अनुसार, 'एनाकोंडा रणनीति' का लक्ष्य निरंतर बाहरी दबाव बनाए रखते हुए ताइवान के आंतरिक समाज को अस्थिर करना है। चीन, बिना प्रत्यक्ष सैन्य टकराव के, ताइवान की सुरक्षा को कमजोर कर वहां अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है, जो उसकी दीर्घकालिक क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं को प्रकट करता है।

नोबेल शांति पुरस्कार 2024

संदर्भः हाल ही में 2024 का नोबेल शांति पुरस्कार जापानी एनजीओ निहोन हिडांक्यो को परमाणु हथियारों से मुक्त दुनिया के लिए मुहिम चलाने के लिए दिया गया है। इस पुरस्कार की घोषणा नॉर्वेजियन नोबेल समिति द्वारा की गई।

एनजीओ का योगदानः

जागरूकता बढ़ाने में भूमिकाः

- निहोन हिडांक्यो (NGO) ने शांति को बढ़ावा देने और परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए वैश्विक स्तर पर जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- वैश्विक स्तर परमाणु युद्ध के विनाशकारी परिणामों को उजागर किया है, जो मानवता के लिए गंभीर खतरा बन सकता है।

अनुभवों का दस्तावेजीकरणः

- संगठन का प्रमुख उद्देश्य परमाणु बम विस्फोटों की भयावहता के प्रत्यक्ष गवाह, हिबाकुशा, के अनुभवों को दस्तावेजित करना है। इसके तहत हजारों गवाहों के बयान एकत्रित किए गए हैं, जो निरस्त्रीकरण की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

सार्वजनिक वकालतः

- निहोन हिडांक्यो (NGO) प्रस्तावों और सार्वजनिक अपीलों के माध्यम से सार्वजनिक वकालत में संलग्न रहता है।
- इसका उद्देश्य जनमत को आकार देना और नीति निर्माताओं पर परमाणु निरस्त्रीकरण की तत्काल आवश्यकता को स्पष्ट करना है।

अंतर्राष्ट्रीय जुड़ावः

- यह संगठन संयुक्त राष्ट्र और विभिन्न शांति सम्मेलनों में वार्षिक प्रतिनिधिमंडल भेजता है।
- इसके माध्यम से यह वैश्विक मंच पर परमाणु निरस्त्रीकरण को बढ़ावा

देने वाली नीतियों का समर्थन करता है।

संवाद और समर्थन जुटाना:

- निहोन हिडांक्यो (NGO) निरस्त्रीकरण के लिए समर्थन जुटाता है और राष्ट्रों के बीच संवाद को प्रोत्साहित करता है।
- यह सुनिश्चित करता है कि परमाणु बम विस्फोट के जीवित बचे लोगों की आवाज अंतरराष्ट्रीय चर्चाओं में सुनी जाए।

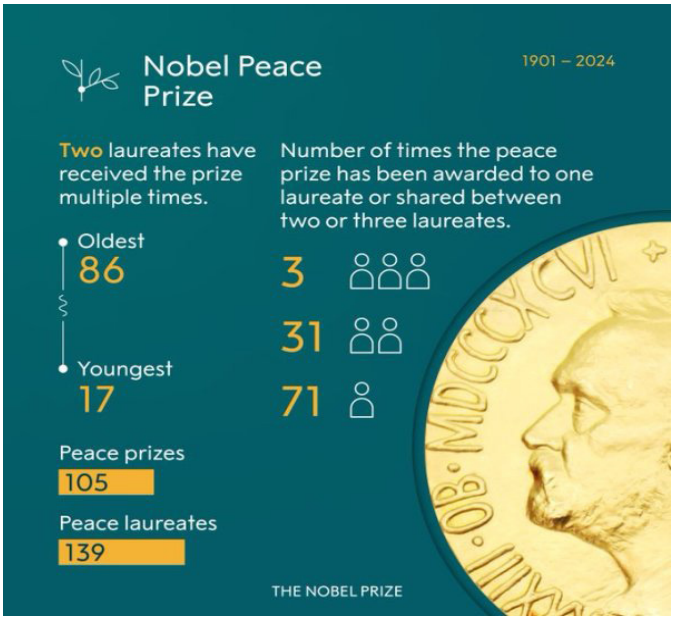

निहोन हिदानक्यो के बारे में:

- निहोन हिदानक्यो एक जापानी गैर सरकारी संगठन है।
- जिसकी स्थापना 1945 में हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु बम विस्फोटों के बाद परमाणु बम से बचने वाले लोगों (जिन्हें हिबाकुशा कहा जाता है) द्वारा की गई थी।
- यह संगठन परमाणु हथियारों से प्रभावित लोगों की सामूहिक आवाज का प्रतिनिधित्व करता है।

पुरस्कार का महत्व:

- नोबेल समिति ने इस पुरस्कार के माध्यम से वैश्विक संघर्षों के बीच 'परमाणु निषेध' को बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया है। यह रेखांकित करता है कि परमाणु हथियार अब तक बनाए गए सबसे विनाशकारी हथियार हैं।
- यह पुरस्कार परमाणु निरस्त्रीकरण के इर्द-गिर्द महत्वपूर्ण चर्चा को उजागर करता है और ऐसे विनाशकारी हथियारों के इस्तेमाल को रोकने की सामूहिक जिम्मेदारी पर बल देता है।

2023 की नोबेल पुरस्कार विजेता:

- 2023 में, नोबेल शांति पुरस्कार ईरानी मानवाधिकार कार्यकर्ता नरगिस मोहम्मदी को दिया गया था। उन्हें महिलाओं के उत्पीड़न के खिलाफ उनकी साहसी लड़ाई और मानवाधिकारों की वकालत के लिए सम्मानित किया गया।

औपचारिक प्रस्तुति समारोह:

- नोबेल शांति पुरस्कार 2024 औपचारिक रूप से 10 दिसंबर, 2024 को ओस्लो, नॉर्वे में आयोजित समारोह में निहोन हिडांक्यो को प्रदान किया जाएगा। यह आयोजन परमाणु निरस्त्रीकरण के संदर्भ में वैश्विक संघर्ष में एक महत्वपूर्ण क्षण को होगा।

सुर्खियों में व्यक्तित्व

जयप्रकाश नारायण

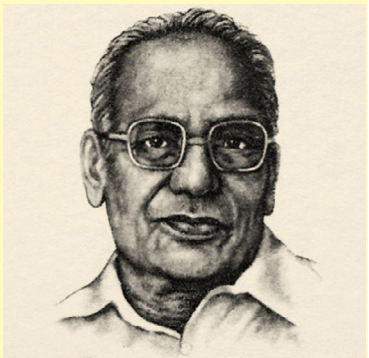

- हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 अक्टूबर 2024 को समाजवादी नेता और आपातकाल विरोधी आंदोलन के प्रतीक जयप्रकाश नारायण को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।
- लोकनायक के नाम से विख्यात जयप्रकाश नारायण का जन्म 11 अक्टूबर 1902 को बिहार के सिताब दियारा में हुआ था। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और प्रारंभ में महात्मा गांधी से प्रेरित होकर, बाद में समाजवादी विचारधारा को अपनाया।
- जेपी ने असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए अपनी पढ़ाई छोड़ी और अमेरिका से शिक्षा प्राप्त करने के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सक्रिय हो गए। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्होंने भूमिगत आंदोलन का नेतृत्व किया और इस दौरान उन्हें जेल भी जाना पड़ा,1942 में हजारीबाग जेल से फरार हो गए।
- 1974 में, भ्रष्टाचार के खिलाफ बिहार में छात्र आंदोलन का नेतृत्व करते हुए, उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक सुधार की मांग करते हुए ष्संपूर्ण क्रांतिष का आह्वान किया। 1970 के दशक में आपातकाल के दौरान उनके नेतृत्व ने इंदिरा गांधी की सरकार की 1977 में हार को सुनिश्चित किया, जिससे वे लोकतंत्र और प्रतिरोध के प्रतीक बन गए।

- जयप्रकाश नारायण का योगदान भारतीय राजनीति में सुधार और सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के रूप में आज भी प्रेरणादायक है। उन्हें 1999 में मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

नाना जी देशमुख

- हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत रत्न नानाजी देशमुख की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। नानाजी देशमुख का जन्म 11 अक्टूबर 1916 को हुआ था। वे एक प्रमुख समाज सुधारक और राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया।

- वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़कर सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहे।
- 1974 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में हुए आपातकाल विरोधी आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। लोक संघर्ष समिति के महासचिव के रूप में उन्होंने नारायण के ष्संपूर्ण क्रांतिष् के आह्वान का समर्थन किया।
- नानाजी ने सरस्वती शिशु मंदिर, चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय (भारत का पहला ग्रामीण विश्वविद्यालय), और दीनदयाल शोध संस्थान (डीआरआई) की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 1980 में राजनीति से संन्यास के बाद, उन्होंने उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के ग्रामीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया और आत्मनिर्भरता, शिक्षा, एवं स्वास्थ्य में सुधार के प्रयास किए।
- वे विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के सक्रिय भागीदार थे, जो भूमि पुनर्वितरण और सामाजिक सुधार के लिए समर्पित था।

UPSC (IAS)
GENERAL STUDIES
16th OCT 2024
ENGLISH MEDIUM
TIME: 8:30 AM | 6:00 PM
Admission Open
MODE : OFFLINE & ONLINE
BOOK YOUR SLOT
A 12 Sector J Aliganj, Lucknow 9506256789
OTHER CENTER : CP1, Jeevan Plaza, Gomti Nagar, Lucknow 7234000501